भारत की सांस्कृतिक विरासत

R.P. Gupta
U.G.C. NET, J.R.F. And
Research Scholar

बहुसांस्कृतिक तत्वों से समन्वित भारत की सांस्कृतिक विरासत बाहय आक्रमण, सांस्कृतिक सम्पर्क और सामाजिक उथल–पुथल के परिणाम स्वरूप हुये नये–नये अनुप्रयोगों का अद्भुद् परिणाम है। इस क्रम में सैंधव सभ्यता काल से जो हमारी प्रमाणिक सांस्कृतिक विरासत प्रारम्भ हुई। वह वैदिक, उत्तर वैदिक, मौर्य, गुप्त, गुप्तोत्तर, राजपूत, सल्तनत, मुगल ब्रिटिश काल होती हुई आधुनिक काल तक निरन्तर समृद्धि होती रही है।

मानव जीवन के सन्दर्भ में विश्व की किसी भी संस्कृति में मानव जीवन को व्यवस्थित करने की इतनी सुदृढ़ योजना नहीं मिलती जितनी कि भारतीय संस्कृति में मिलती हैं। यहां जहां चार आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास के द्वारा मानव जीवन को चार अवस्थाओं में बांटा गया। वहीं चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के माध्यम से उसे अपने उद्देश्यों की ओर प्रवृत्ति किया गया। इसके अतिरिक्त सोलह संस्कारों की भी व्यवस्था की गयी है। जिसका उद्देश्य मनुष्य के आत्मिक शुद्धिकरण से है। इस सम्बन्ध में डा0 राजबली पाण्डेय का कथन है– ''जिस प्रकार चित्रकला में सफलता प्राप्त करने के लिए विविध रंगो की आवश्यकता होती है उसी प्रकार चरित्र निर्माण भी विभिन्न संस्कारों द्वारा ही होता है।'' इस प्रकार भारतीय संस्कृति मानव जीवन को बहुमूल्य मानते हुये उसके नियोजित एवं उद्देश्य पूर्ण विकास पर बल दिया गया जो भारतीय संस्कृति की अपनी विशिष्टता अपनी विरासत है। आस्था एवं विश्वसास के सन्दर्भ में भारत वर्ष आस्था एवं विश्वास की संगम स्थली हैं। यहाँ हिन्दू भी है, मुसलमान भी है, सिख भी है ईसाई भी है, जैन भी है, बौद्ध भी है। दर्शन के क्षेत्र में भी कोई कपिल के 'सांख्य दर्शन' का तो कोई कणाद या उलूक के वैशेषिक का कोई पतंजलि के 'योगदर्शन' का तो कोई गौतम के न्याय दर्शन का अनुयायी है। इस प्रकार भारतवर्ष आस्था एवं विश्वास के महासमुद्र की भाँति है। जिसमें अनेक मत–मतान्तर स्पर्धाएँ मिलकर महासमुद्र का रूप धारण करती है, अन्य शब्दों में भारत की सांस्कृतिक विरासत का रूप धारण करती है। त्योंहारो व्रतों, तीर्थो के सन्दर्भ में विश्व की किसी भी संस्कृति में इतने अधिक व्रतों, त्योहारो, मेलो, तीर्थो एवं स्थान पर्वो की व्यवस्था देखने को नहीं मिलती है जितनी कि भारत वर्ष में दिखाई पड़ती है यहां मनाये जाने वाले प्रमुख त्योहारो में हम पोंगल, भोगाली, बिहू, बसंत पंचमी, महाशिवरात्रि, जमशेद नवरोज, होली, महावीर जयन्ती, रामनवमी, गुड फ्राइडे, ईस्टर, बुद्ध जयंती, बैशाखी, रंगोली बिहू, नागपंचमी, जन्माष्टमी गणेश चतुर्थी, रक्षाबन्धन,

ओणम, दशहरा, दीपावली, छठपूजन, गुरुपर्व क्रिसमस आदि की चर्चा कर सकते है। इसके अतिरिक्त यहां अनेक तीर्थ हैं जिनमें शंकराचार्य द्वारा स्थापित बद्रीनाथ, पुरी, द्वारिका, रामेश्वर चार पवित्र धाम है इसके अलावा माउन्ट आबू, अमृतसर, अमरनाथ, अयोध्या, गया, बहराइच, हरिद्वार, प्रयाग उज्जैन, नासिक, वाराणसी, अजमेर, कोणार्क, शिरडी, तिरुपति इत्यादि यहां के महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है ये सभी तीज, त्यौहार व्रत, मेले, तीर्थ हमे एक मंच पर लाकर सहअस्तित्व का बोध कराते है।

कला तथा शिल्प के अर्थ में कला तथा शिल्प से सम्बन्धित प्रत्येक विधा में भारत की सांस्कृतिक विरासत अत्यन्त समृद्ध रही है, चित्रकला में जहां मानवीय मनोभावों के सूक्ष्म एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण के चलते अजंता, एलोरा, बाघ, बादामी तथा सित्तल, बासल के चित्र विश्व की श्रेष्ठ कलाकृतियाँ गिनी जाती है।

वही स्थापत्य कला के अन्तर्गत उत्तर भारतीय नागरशैली में निर्मित 'कोणार्क का सूर्य मन्दिर', खुजराहों का कन्दारिया का महादेव मन्दिर, पुरी का जगन्नाथ मन्दिर, माउन्ट आबू का दिलवाड़ा मन्दिर दक्षिण भारत की द्रविड़ शैली के अन्तर्गत निर्मित मामल्लपुरम के रथमन्दिर, तंजोर का वृद्धेश्वर मन्दिर, उत्तर तथा दक्षिण भारत के मिश्रित प्रभाव से जन्मी बेसर शैली के अन्तर्गत निर्मित देवगढ़ का दशावतार मन्दिर, एलोरा का कैलाश मन्दिर विशेष उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त अशोक कालीन सारनाथ स्तम्भ जिसके ऊपर चार सिंहो का अंकन है तथा जिसे भारत के राजचिन्ह के रूप में स्वीकार किया गया है। इसी प्रकार स्तूपों में सारनाथ का स्तूप उल्लेखनीय है, जो गुप्त काल कलाकृति है। इसके अतिरिक्त दिल्ली में कुतुबमीनार सल्तनतकालीन कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना है। मुगलकाल में अकबर द्वारा फतेहपुर सीकरी में निर्मित जोधाबाई का महल, दीवन ऐ आम, दीवान ए खास बीरबल का महल, पंचमहल, जामामस्जिद, बुलंद दरवाजा आदि उल्लेखनीय है। इन सबके अतिरिक्त शाहजहां द्वारा बनवाया गया ताजमहल विश्व के आश्चर्यों में से एक है। शाहजहां द्वारा निर्मित लालकिला भी भारत की एक अत्यंत महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत है। यही वह इमारत है जिस पर पंडित नेहरू ने 15 अगस्त 1947 को स्वाधीन भारत का तिरंगा फहराया था। इसकी दीवारों पर आज भी ये शब्द अंकित है–

"गर फिरदौस बर रुये जमी अस्त।
यीं अस्त, यीं अस्त यीं अस्त।"

अर्थात् यदि पृथ्वी पर कही स्वर्ग है तो यही है, यही है इसकि अतिरिक्त हम आधुनिक कला शिल्पों में आनन्द भवन, इण्डिया गेट, गेटवे ऑफ इण्डिया शान्ति निकेतन, राष्ट्रपति भवन संसद भवन आदि का उल्लेख कर सकते है।

संगीत एवं नृत्य के सन्दर्भ में संगीत गायन एवं नृत्य विधाओं की दृष्टि से भी भारत की सांस्कृतिक विरासत अत्यन्त समृद्ध रही है। यहां शास्त्रीय संगीत गायन से सम्बन्धित दो शैलियां है–

1. हिन्दुस्तानी शैली
2. कर्नाटक शैली

इसके अतिरिक्त अन्य शास्त्रीय नृत्य भी प्रचलित है जिनमें भारतनाट्यम, कथकली, कुचिपुड़ी मोहिनी अट्टम दक्षिण भारत के ओडिसी, मणिपुरी, पूर्वी भारत के तथा कत्थक उत्तरी भारत का शास्त्रीय नृत्य हैं। अनेक लोकनृत्यों में जिनमें मिजोरम का बॉस नृत्य हैं। उनके लोकनृत्यों में जिनमें मिजोरम का बॉस नृत्य मध्यप्रदेश का कम्सर बिहार का जादुर, आन्ध्रप्रदेश का लिंगी, उड़ीसा का हाऊ, पंजाब का भांगड़ा, मणिपुर का लाई हरोबा, तमिलनाडु का कोलट्टम गुजरात का गरवा कश्मीर का रऊफ तथा राजस्थान का डाण्डिया रास प्रमुख हैं। ये सभी विविध संगीत एवं नृत्य हमारी मानवीय संवेदनाओं को ध्वनित कर हमें हमारी संस्कृति का जीवंतता का अहसास कराते हैं।

महापुरुषों के सन्दर्भों में भारत भूमि अनेक पुरुषों की जन्म स्थली है। जिनमें गौतम बुद्ध, महाबीर स्वामी, अशोक, अकबर, नानक, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, चैतन्य प्रभु, नामदेव, तुकाराम, राजा राम मोहन राय, रामकृष्ण परम हंस, दयानन्द, विवेकानन्द, तिलक, गोखले तथा महात्मा गाँधी के नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने न केवल सत्य, अहिंसा, शान्ति सहिष्णुता प्रेम विश्वबंधुत्व त्याग तथा समर्पण के मार्ग पर मानवमात्र को चलाने का संदेश दिया अपितु स्वयं भी उस पर चले। इन सभी महापुरुषों ने अपने सत् प्रयासो से भारत का रुढ़िमुक्त जीवन समाज बनाने का प्रयास किया, आज का आधुनिक भारत इनके ही सत्प्रयत्नों की बुनियाद पर खड़ा है।

साहित्य सृजन के सन्दर्भ में साहित्य–सृजन के क्षेत्र में भी भारत की सांस्कृतिक विरासत अत्यन्त समृद्ध रही हैं। चारों वेद, पुराण, ब्राह्मण, सूत्र, वेदांग, समृतियाँ जहां वैदिक साहित्य का प्रतिनिधित्व करते है, वही पितकों, जातको में बौद्ध साहित्य तो 'आगम' ग्रन्थो में जैन धार्मिक साहित्य है।

महाकाव्य लेखन के अन्तर्गत 'रामायण' तथा 'महाभारत' जैसी कालजयी कृतियों का सृजन भी यही हुआ। साहित्यिक कृतियों में हम कालिदास कृत–अभिज्ञान शाकुन्तलम्, कुमारसंभवम् रघुवंशम, मेघदूतम् मालविकाग्निमित्रम्, ऋतुसंहार, विक्रमोर्वशीयम् का उल्लेख कर सकते है।

नारी के सन्दर्भ में विश्व की किसी भी संस्कृति में नारी के सम्मान को इतना महत्व नहीं दिया गया जितना कि भारतीय संस्कृति में नारी सम्मान के सन्दर्भ में यह उद्भोदन रहा है– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'' अर्थात जहाँ नारी का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते है। पंत ने नारी मुक्ति का आह्वान करते हुये कहा है–

''मुक्त करो नारी को मानव
चिर वन्दिनी नारी को।
युग–युग की निर्मम कारा से,
जननि सखि, प्यारी को।''

इस प्रकार भारतीय संस्कृति में नारी को त्याग, समर्पण, प्रेम और सौभाग्य की प्रतिमूर्ति मानते हुये उसे पूज्नीय माना जाता है।

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि भारतीय संस्कृति एक जीवंत संस्कृति है और उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत इसका गौरव है। जिसमें मनुष्य चरित्र निर्माण से लेकर उसके जीवन के समस्त रचनात्मक पहलुओं पर न केवल गम्भीरता के साथ विचार किया गया, अपितु आदर्शो एवं सुकृत्यों द्वारा उन्हे मूर्त रूप में परिणित भी किया गया।

R.P. Gupta
U.G.C. NET, J.R.F. And
Research Scholar